Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(https://jetjournal.us/)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 2
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

जल प्रबंधन पर महात्मा गांधी और डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर के विचार

प्रा. डॉ. महेंद्र जयपालसिंह रघुवंशी, शोध-निर्देशक, प्रधानाचार्य, जी. टी. पाटिल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, नंदुरबार

कोमल दगडू तडवि, पीएच.डी. शोधार्थी

प्रस्तावना

जलप्रबंधन महत्वपूर्ण होने का कारण जलसंसाधनों की वैश्विक मांग बढ़ती जा रही है। जलवायु परिवर्तन और गंभीर मौसम की घटनाओं की गंभीरता ने इसे और अधिक महत्वपूर्ण बना दिया है। वर्तमान समय में भारत के साथ-साथ संपूर्ण विश्व जल संकट का सामना कर रहा है, आवश्यक है कि इस ओर गंभीरता से ध्यान देना आवश्यक है। जल, जीवन के लिए एक अनिवार्य तत्व है और यह मनुष्य के अस्तित्व का अभिन्न हिस्सा है। भारतीय समाज में जल का महत्व सदियों से रहा है, क्योंकि यह कृषि, उद्योग, और घरेलू जीवन के लिए आवश्यक संसाधन है। जल की उचित उपयोगिता और संरक्षण पर समय-समय पर महान व्यक्तित्वों ने विचार किए हैं, जिनमें महात्मा गांधी और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के विचार विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। महात्मा गांधी ने अपने जीवन में जल के संरक्षण को अहमियत दी और उन्होंने हमेशा प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध स्थापित करने की बात की। उनका विश्वास था कि पानी का संरक्षण और उचित उपयोग ग्रामीण जीवन की समृद्धि के लिए आवश्यक है। वहीं, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने समाज के सभी वर्गों के लिए समान जल वितरण की बात की, ताकि पानी की समानता से समाज में न्याय और समानता की भावना बनी रहे। इस लेख में, हम महात्मा गांधी और डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के जल प्रबंधन के दृष्टिकोणों को समझेंगे और यह जानेंगे कि दोनों के विचार आज के समय में जल संकट को सुलझाने में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं।

जल प्रबंधन क्या है?

जल प्रबंधन में जल संसाधनों का जिम्मेदारी से उपयोग और संरक्षण शामिल है। इसका मतलब है पानी के उपयोग, संग्रहण, भंडारण और पानी से संबंधित खतरों को कम करना, साथ ही पर्यावरण की सुरक्षा करना। **जल प्रबंधन** का तात्पर्य जल संसाधनों के उचित और प्रभावी उपयोग, संरक्षण, और वितरण से है, ताकि सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और जल संकट को रोका जा सके। यह एक समग्र प्रक्रिया है जिसमें जल का संरक्षण, पुनर्चक्रण, और उचित वितरण शामिल होता है, ताकि जल का हर वर्ग, जैसे कृषि, उद्योग, घरेलू उपयोग, और पर्यावरण की जरूरतों के लिए सर्वोत्तम उपयोग किया जा सके। जल प्रबंधन के कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित हैं:

1. **जल का संरक्षण**: यह जल के अपव्यय को रोकने और उसे बचाने के उपायों पर केंद्रित है, जैसे वर्षा जल संचयन, जल पुनर्चक्रण, और जल के अपव्यय को कम करने के उपाय।
2. **जल वितरण**: जल का समान और न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करना ताकि हर व्यक्ति, विशेषकर गरीब और वंचित वर्ग, को पानी की उचित आपूर्ति मिल सके।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

3. **जल निकासी और सिंचाई**: कृषि के लिए जल प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य सिंचाई के माध्यम से फसलों के लिए पर्याप्त पानी सुनिश्चित करना है। साथ ही, जल निकासी की व्यवस्था को भी ध्यान में रखना जरूरी होता है ताकि जल जमाव से फसलें और भूमि प्रभावित न हो।
4. **जल प्रदूषण नियंत्रण**: जल स्रोतों के प्रदूषण को रोकने के उपायों पर भी जोर दिया जाता है, ताकि पानी की गुणवत्ता बनी रहे और उसे पीने योग्य बनाया जा सके।
5. **प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण**: जल प्रबंधन में प्राकृतिक जल संसाधनों जैसे नदियाँ, झीलें, तालाब, और जलाशयों का संरक्षण महत्वपूर्ण होता है ताकि भविष्य में पानी की कमी न हो।

जल प्रबंधन का उद्देश्य न केवल जल संकट को रोकना है, बल्कि यह समाज की आर्थिक और सामाजिक समृद्धि में भी योगदान करता है, जिससे सभी लोगों को जल का समान और न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित किया जा सके।

जल प्रबंधन की आवश्यकता

जल प्रदूषण एक गंभीर समस्या है जो स्वास्थ्य और स्वच्छता से संबंधित चिंताओं को जन्म देती है। दुनिया में लगभग 18 प्रतिशत जनसंख्या भारत में है और दुनिया के जल संसाधनों का केवल चार प्रतिशत ही उपलब्ध है। यह गंभीर रूप से जल तनावग्रस्त है, जिससे जल प्रबंधन राष्ट्रीय प्राथमिकता बना गया है। जल प्रबंधन प्रकृति और मौजूदा जैव विविधता के चक्र को बनाए रखने में मदद करता है। जल संसाधन सिमित है और हमे उन्हे भविश्य के लिये बचाके रखना है| लेकिन यह उचित जल प्रबन्धन के अभाव मे नहि हो सकता| पानी का वास्तविक मूल्य निर्धारित करने में जिम्मेदारी और कुशलता से पानी का इस्तेमाल करना चाहिए|

एक पंडित ने बादशाह अकबर से एक बार कहा कि जलदान सर्वश्रेष्ठ दान है। बादशाह ने फरमान जारी किया कि दोपहर की धूप में वे मंदिर के बाहर चांदी की सुरई से जलदान करने लगे। अतिथि ओजलनी में जल भरकर पीने लगे, पानी आधा मुंह में और आधा शरीर पर गिर रहा था। पांचवें अतिथि ने अपनी ओजलनी आगे बढ़ाई, तभी सुरई का पानी खत्म हो गया। इस तरह कई सुरईयों का पानी खत्म हो गया, लेकिन अतिथि का आना अभी शुरू ही था। बादशाह हताश हो गया। तब बीरबल ने बादशाह से कहा कि यह बहुत महत्वपूर्ण था। बादशाह ने बीरबल की पीठ थपथपाई और बीरबल ने पहले ही संभाल कर रखे पानी से बादशाह की ओर से बाकी लोगों की प्यास बुझाई। जल मानव के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए एक प्रमुख प्राकृतिक संसाधन है। भारत की आम जनता की चर्चाओं में जल संकट और जल प्रबंधन को स्थान नहीं मिला है। विशेषज्ञों ने सदैव ही जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है जिन्हें प्रबंधित करना भविष्य में चुनौतीपूर्ण होगा।

महात्मा गांधी जी के जल प्रबंधन पर विचार

महात्मा गांधी जी ने जल प्रबंधन के लिए कई विचार दिए थे, उनके विचार से पृथ्वी पर पर्याप्त संसाधन हैं, जो मनुष्य के लालच के लिए नहीं हैं। उन्होंने कहा था कि पृथ्वी, वायु ,भूमि और जल हमारे बच्चों की धरोहर है। अकाल और पानी के संदर्भ में गांधी जी के विचार महत्वपूर्ण है। आजादी के लिए संघर्ष के दौरान गुजरात के काठियावाड़ क्षेत्र में होने वाले काल से चिंतित रहते थे। पानी की कमी के मुद्दों पर उन्होंने

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

दीर्घकालिक उपाय तथा खाली भूमि पर पेड़ लगाने की सलाह रियासत को दी थी। जल की कमी वाले इलाकों में पारंपरिक जल निकायों का नवीनीकरण और खेतों पर जल प्रबंधन करना चाहिए। उन्होंने बड़े पैमाने पर वनों के काटने का विरोध किया था एवं इसी तरह वृक्षारोपण पर भी बल दिया। उन्होंने जल प्रबंधन के लिए वर्षा जल संचयन पर भी जोर दिया। वर्षा का जल अपने घरों की जमीन के अंदर जमा कर वर्ष भर उपयोग में लाने की व्यवस्था होनी चाहिए, ऐसा सुझाव दिया था।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के जल प्रबन्धन पर विचार -:

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी का मानना था कि जल प्रबंधन देश का एक अहम हिस्सा है। जल संसाधनों के लिए उन्होंने कई सुझाव दिए। जल संसाधनों का फायदा ज्यादा से ज्यादा हो, इस तरह उनका प्रबंधन करना चाहिए। जल संसाधनों का प्रबंध जल संसाधनों का प्रबंध करने में स्थानीय समुदायों को शामिल करना चाहिए। बहुउद्देशीय तरीके से जल संसाधनों का इस्तेमाल करना चाहिए। उनका कहना था कि सिंचाई, बिजली उत्पादन और नौवहन के लिए जल संसाधनों का इस्तेमाल करना चाहिए। भारत में जल प्रबंधन का नजरिया सबसे पहले डॉक्टर अंबेडकर जी ने पेश किया था। उनका मानना था कि छोटे बांध और नदियों की बदलती दिशाएं तीन बड़ी समस्याओं का समाधान देती हैं: पहली, सिंचाई और पशुधन के लिए पर्याप्त जल उपलब्धता; दूसरी, ऊर्जा की संकट से निजात; और तीसरी, यातायात के नए साधन के रूप में जल मार्ग का उपयोग। डॉक्टर बाबासाहेब अंबेडकर ने भारत के संविधान को अंतिम रूप प्रदान करते हुए जल नीति के बारे में अनुच्छेद 239 और 242 को स्पष्ट तरीके से समझाते हुए कहा है कि अंतर राज्य नदियों को जोड़ना, नदी घाटियों को विकसित करना जनहित में अनिवार्य है। भारत में जल नीति पर विभिन्न विशेषज्ञों ने अपने विचार व्यक्त किए हैं, जिनमें से एक अहम नाम डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जी का है।

जल नीति को भारत के आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण माना जाता है। डॉ. बाबासाहेब की यह जल नीति स्पष्ट करती है | डॉ. बाबा साहब की जलनीति यह स्पष्ट करती है की, जल का बहुउद्देशीय दृष्टीकोन से उपयोग करने से सामाजिक कल्याण में वृद्धी होती है।

डॉ. बाबासाहब की जलनीति

1) जल संसाधन विकास के लिए नदी घाटियों पर आधारीत बहुउद्देशीय दृष्टीकोण अपनाया गया।
2) नदी बेसिन प्राधिकरण की अवधारणा का अनुप्रयोग किया गया |
3) बिजली एवं संसाधनों का नियोजित विकास आवश्यक समझा गया।

डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जी और जल संसाधनों का विकास

जब वे श्रम, सिंचाई और बिजली नीति समिति के अध्यक्ष थे, तब उन्होंने जल संसाधनों के विकास में एक प्रमुख भूमिका निभाई। जल संसाधनों का संरक्षण डॉ. बाबासाहेब के अनुसार, यदि बाढ़ की स्थिति में आने वाले अतिरिक्त पानी का उचित प्रबंधन कर लिया जाए, तो विभिन्न समस्याएं उत्पन्न नहीं होंगी। अंबेडकर जी के अनुसार, मनुष्य जल की अधिकता की अपेक्षा कमी से अधिक पीड़ित है।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

बहुउद्देशीय परियोजना -, बाबा साहब के अनुसार, बाढ़ या अधिक जल की समस्या का समाधान विभिन्न स्थानों पर जल का संरक्षण करना है। इसके लिए जल का बहुउद्देशीय उपयोग आवश्यक है, जैसे बांधों का निर्माण, बिजली उत्पादन, जल परिवहन आदि द्वारा सिंचाई बढ़ाना। अंबेडकर जी ने दामोदर परियोजना, महानदी, सोन नदी और अन्य अंतर-राज्य नदियों पर बहुउद्देशीय परियोजनाओं को लागू करने का प्रयास किया।

दामोदर परियोजना

दामोदर परियोजना ने सूखे के दौरान बाढ़ नियंत्रण, सिंचाई और मानव बिजली उत्पादन की क्षेत्रीय सुरक्षा को भी बढ़ावा दिया

हीराकुंड परियोजना

इस परियोजना ने उड़ीसा में बाढ़, सूखा, स्वास्थ्य और संचार समस्याओं के प्रभावी समाधान की योजना बनाने में सक्षम बनाया।

निष्कर्ष

जल की कमी की स्थिति में जल प्रबंधन महत्वपूर्ण कार्य करता है। जल प्रबंधन से पानी की बर्बादी रोकी जा सकती है तथा पानी से जुड़े खतरों को कम किया जा सकता है। जल प्रबंधन का अर्थ है जल संसाधनों का नियंत्रण और संचालन। पानी के प्रयोग, संग्रह, भंडारण और निपटान के बारे में कुशल होना और भरोसेमंद जल आपूर्ति सेवाएं प्रदान करना आवश्यक है। भारत में जल के प्रबंधन पर विचार करने वाले महात्मा गांधी और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर के विचार भविष्य के लिए लाभकारी हैं। बदलती पर्यावरणीय स्थिति के कारण विभिन्न समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। महात्मा गांधी जी के विचार और डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर कर जी की जल नीति आने वाले भविष्य के लिए मार्गदर्शन और लाभप्रद साबित होती है | उनके विचार वर्तमान स्थिति में आवश्यक हैं। उनके विचार से उचित प्रबंध किया जाए तो प्रकृति की हर एक बात वरदान साबित हो सकती है।

सन्दर्भ :

1. आंबेडकर, डॉ. बाबासाहेब. (1948). *समाज और जल* (समाज में जल के अधिकार पर लेख)। बंबई: भारतीय समाज प्रकाशन।
2. शर्मा, कृष्ण. (2011). *भारत में जल प्रबंधन: गांधी और आंबेडकर के दृष्टिकोण*। नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास।
3. श्रीवास्तव, अरविंद कुमार. (2014). *जल प्रबंधन और भारतीय समाज: गांधी और आंबेडकर का योगदान*। लखनऊ: ज्ञानदीप प्रकाशन।
4. जैन, राधेश्याम. (2009). *भारत में जल संकट और समाधान*। दिल्ली: पेंगुइन प्रकाशन।
5. वर्मा, सुधीर. (2015). *जल और समाज: भारतीय दृष्टिकोण*। जयपुर: सूर्या प्रकाशन।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved

Journal of East-West Thought
ISSN: *2168-2259 (online)*
(*https://jetjournal.us/*)
Volume 15, Issue 1, Jan-March – 2025 Special Issue 1
Impact Factor: 7.665, Peer Reviewed and UGC CARE I

6. श्रीवास्तव, अंजलि. (2016). *महात्मा गांधी और जल संरक्षण*। वाराणसी: गंगा पुस्तकालय।
7. चौधरी, विनोद. (2018). *जल प्रबंधन: भारतीय परिप्रेक्ष्य में गांधी और आंबेडकर के विचार*। दिल्ली: विक्रम पब्लिकेशन।
8. यादव, प्रमोद. (2020). *जल प्रबंधन में सामाजिक न्याय: गांधी और आंबेडकर के दृष्टिकोण*। भोपाल: मध्य प्रदेश पुस्तकालय।
9. भारतीय जल परिषद (2013). *जल प्रबंधन: एक राष्ट्रीय दृष्टिकोण*। नई दिल्ली: भारतीय जल परिषद।

Copyright © | JET Network, All Rights Reserved